

शासन असीमित : जब एआई सोचने लगे , जलवायु ठनने लगे और मंगल पर राज करने चले

दीपक धानकर | बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान | द्वितीय वर्ष | देशबंधु कॉलेज

ईमेल आईडी- ddhankar10032005@gmail.com

इंसान की फ़ितरत है हमेशा कुछ नया तलाशने की, अपनी सीमाओं से आगे सोचने की। जब इंसान ने पहली बार आग जलाई होगी, तब शायद उसे अंदाज़ा भी नहीं रहा होगा कि यह उसकी शुरुआत भर है। पहले पत्थर और बांस के घर्षण से आग जलाना सीखा, फिर उसी पत्थर से औजार बनाए और शिकार किया, पहिया बनाया, खेती शुरू की, घर बसाए, और धीरे-धीरे जंगल से निकल कर शहर तक का सफ़र तय किया। लेकिन इस पूरे सफ़र में इंसान ने स्वयं को सिष्ट का मालिक समझ लिया। उसने धरती से बेपनाह लिया, लेकिन लौटाया कुछ नहीं। अब हाल यह है कि जलवायु संकट सर पर मंडरा रहा है, और हम हैरान होकर एयर-कंडीशनर में बैठकर उसी विषय पर विचार कर रहे हैं कि यह सब कैसे हो गया।

औद्योगिक क्रांति के बाद से विकास की दौड़ इतनी तेज़ हो गई कि इंसान ने पीछे मूड़ कर देखना ही छोड़ दिया फैक्ट्रियों का धुआं, जंगलों की कटाई, तेल और खनिज का बेहिसाब दोहन—सब कुछ हमने बेझिझक किया। नतीजा? ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, बेमौसम बारिश और सूखे ने किसानों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। बड़ी-बड़ी संध्या हुई—क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौता—पर अमीर देशों ने अपना हिस्सा निभाने के बजाय गरीब देशों पर उंगली उठानी शुरू कर दी। अमेरिका तो ट्रंप के दौर में पेरिस समझौते से ही बाहर निकल गया। अमीर देश अब भी सबसे अधिक प्रदूषण कर रहे हैं और गरीब देशों से कहा जा रहा है कि वे ग्रीन एनर्जी अपनाएं। यह भी राज़ब है!

AI का आगमन

लेकिन इंसान का दिमाग तेज़ चलता है। अब उसने इस संकट से निपटने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का सहारा लिया है।

AI से मौसम की सटीक भविष्यवाणी हो रही है, ऊर्जा की खपत का बेहतर प्रबंधन किया जा रहा है, प्राकृतिक आपदाओं से पहले चेतावनी दी जा रही है। स्मार्ट ग्रेड्स, ऑटोमेटेड फार्मिंग, और ग्रीन एनर्जी सिस्टम—ये सब AI की ही देन हैं। पर यहाँ भी एक विडंबना है। AI को चलाने के लिए जितने डेटा सेंटर्स बनाए गए हैं, वे खुद इतनी बिजली उपयोग कर रहे हैं कि कार्बन उत्सर्जन और बढ़ रहा है। मतलब, जिस तकनीक से हम समाधान खोज रहे थे, वही अब समस्या का हिस्सा बन गई है। AI की एक और समस्या है—इसकी नैतिकता। अगर कल AI ने फैसला ले लिया कि किसी देश की अर्थव्यवस्था को गिराना है या किसी युद्ध को भड़काना है, तो जिम्मेदार कौन होगा—इंसान या मशीन? एलन मस्क ने खुद कहा है कि AI अगर बेकाबू हो गया, तो इंसान का क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। सोचिए, अगर कल AI ने सोच लिया कि इंसान ही इस धरती की सबसे बड़ी समस्या है, तो क्या होगा?

कॉसमॉस की ओर रुख

और जब धरती का हाल बेकाबू होने लगा, तो इंसान ने नजरें ऊपर टिका लीं—अंतरिक्ष (COSMOS) की ओर। अब खेल सिर्फ धरती तक सीमित नहीं है। एलन मस्क और जेफ़ बेज़ोस जैसे लोग चाँद और मंगल पर बिस्तियाँ बसाने का सपना देख रहे हैं। मस्क का कहना है कि मंगल पर इंसानी कॉलोनी बसाना ज़रूरी है ताकि मानव सभ्यता का अस्तित्व बचा रहे। स्पेसएक्स और ब्लू ओरिजन जैसी कम्पनियाँ दावा कर रही हैं कि भविष्य अब अंतरिक्ष में है। लेकिन सवाल यह है कि मंगल पर शासन कौन करेगा? लोकतंत्र होगा या तानाशाही? या फिर किसी कॉरपोरेशन का झंडा वहाँ लहराएगा? और अगर मंगल की खदानों से खनिज निकले, तो कौन तय करेगा कि यह संपत्ति किसकी है?

GOVERNANCE UNBOUND—अब आगे क्या ?

यही असली सवाल है—GOVERNANCE UNBOUND का। जब धरती पर बनाए गए कानून और व्यवस्थाएँ अंतरिक्ष, AI, और जलवायु संकट से निपटने में नाकाम हो जाएँ, तो क्या किया जाएगा? क्या मंगल पर चुनाव होंगे? वहाँ का संविधान कौन लिखेगा—संयुक्त राष्ट्र या कोई निजी कंपनी? क्या वहाँ भी अमीर देशों का राज होगा और गरीब देश फिर से संसाधनों के लिए तरसेंगे?

आगे का रास्ता

इससे निपटने के लिए वैश्विक सहयोग ज़रूरी है। AI के लिए एक सख्त और पारदर्शी नैतिक ढाँचा तैयार करना होगा ताकि इसके गलत उपयोग को रोका जा सके। अंतरिक्ष संसाधनों के स्वामित्व और उपयोग के लिए एक अंतराष्ट्रीय संधि बनानी होगी, ताकि भविष्य में मार्शियन कॉलड वॉर' न हो। साथ ही, तकनीकी विकास और पर्यावरणीय संतुलन के बीच संतुलन बैठना होगा। ग्रीन एनर्जी और टिकाऊ विकास को प्राथमिकता देनी होगी ताकि धरती भी सांस ले सके।

निष्कर्ष

GOVERNANCE UNBOUND का मतलब है कि अब तक के नियम और व्यवस्थाएँ इस नए दौर के लिए नाकाफ़ी साबित हो रही हैं। जलवायु संकट, AI, और अंतरिक्ष की खोज ने इंसान के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। लेकिन यह संकट अपने साथ नए अवसर भी लेकर आया है। अगर वैश्विक स्तर पर मिलकर AI को नियंत्रित किया जाए और अंतरिक्ष संसाधनों के उपयोग के लिए स्पष्ट नियम बनाए जाएँ, तो इंसान एक नए युग की शुरुआत कर सकता है। सवाल यह है—क्या इंसान अपने लालच से ऊपर उठकर इस चुनौती का हल खोज पाएगा, या फिर मंगल पर भी चुनावी पोस्टर और कॉरपोरेट झंडे लहराएँगे? वक्त का पहिया घूम रहा है—अब देखना यह है कि इसे सही दिशा कौन देगा—इंसान या AI?